Killing of a Harijan in Police Firing In Tsundur, Village, Guntur District, Andhra Pradesh

DR. YELAMANCHILI SIVAJI (Andhra Pradesh): Madam Deputy Chairman, yesterday police resorted to firing in Tsundur village, Guntur district of Andhra Pradesh and again a Harijan was killed. In the last month about ten Harijans were massacred in Tsundur village and precious little was done. A "fast unto death" camp was going on with a demand to punish the police who were found guilty and who were hand-in-glove with the culprits. The Government of Andhra Pradesh have suspended the police officials but no case was registered against them who were responsible for the massacre of last month. So the Harijan have started a "fast unto death" camp and their fast is going on since the 1st of this month. It is a fact that the entire village is deserted from both the sides and it is sealed by the police and nobody else from outside is allowed to enter the village nor the villager are allowed to undertake their own daily activities. The police reported to firing and ultimately a Harijan was killed. There is a complete breakdown of law and order in the State. The State Government has not taken any necessary measures to restore either law and order or the confidence of Harijans and either weaker sections in the State. I would like to advise the Central Government to intervene in this context so that necessary confidence may be created among the weaker sections of the State.

SHRI SANGH PRIYA GAUTAM (Uttar Pradesh): I associate myself with Dr. Sivaji.

Merciless Beating of a Journalist in Delhi

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया: (बिहार) महोदया हम पिछले कई दिनों से पुलिस द्वारा जो तरह-तरह से अत्याचार किए जा रहे हैं, उनकी ओर ध्यान आकर्षित कर रहे हैं और इस बारे में कई बार विचार-विमर्श हुआ है । उपसभापति महोदया, अफसोस इस बात का है कि जिस वक्त पुलिस किसी निर्दोष आदमी को मारती है और उसकी पहचान न हो तो उसकी जो गत होती है वह तो होती ही है और हम आए दिन अखबारों में पढ़ते हैं कि पुलिस कस्टडी में निर्दोष आदमी पुलिस के अत्याचार से मारा गया।

महोदया, मैं जिस घटना का जिक्र कर रहा हूं यह 6 तारीख की है । उस दिन यूनीवार्ता के एक सब-एडीटर श्री मनोहर सिंह बस से यात्रा कर रहे थे और उसी बस में दिल्ली पुलिस में एक असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर का यात्रा कर रहा था । उन्हें अगले स्टाप पर उतरना था इसलिए उन्होंने उससे कहा कि आप जरा हट जाइए। इस पर बहस हुई और उसने न आव देखा न ताव और उनका कालर पकड़कर दो-चार घूंसे लगा दिए। यह घटना बोट क्लब के पास घटी और यह दिल्ली की घटना है। दिल्ली पुलिस के ए.एस.आई. ने जब दो-चार घूंसे लगा दिए तो उन्होंने अपना परिचयपत्र दिखाया कि मैं पत्रकार हूं। जब पुलिस वाले को समझ आया कि उसने पत्रकार को घूंसे लगा दिए हैं, अब अखबार में छप जाएगा, संसद में इसकी चर्चा होगी तो उसका दिमाग तेजी से काम करने लगा। आज तक आतंकवादियों को पकड़ने के लिए उनका दिमाग काम नहीं करता लेकिन लोगों को झूठमूठ फंसाने के लिए उनका दिमाग इतनी तेजी से काम करता है कि उसने उन्हें पाकेटमार बना दिया और कहा कि इसने मेरी पाकेट मारी है। जब पुलिस वाले ने उन्हें जेबकतरा बता दिया तो मजमा इकटठा हो गया और लोगों ने उन्हें बहुत पीटा। जब कुछ जानकार लोग वहां इकटठे हुए और उन्होंने बीचबचाव करने की कोशिश की तो पुलिस वाले ने कहा कि यह तो जेब-

कतरा है, इसने मेरी जेब काटी है और उस पत्रकार को बोट क्लब थाने में ले जाया गया और रोककर रखा गया। उन्होंने वहां से दफ्तर में फोन किया, वहां से लोग आए और दिल्ली यूनियन ऑफ वर्किंग जर्नलिस्ट्स के लोग थाने पहुंचे और उन्होंने उस पत्रकार को छुड़वाया। और उनका एक डेलीगेशन कमिश्नर से जाकर मिला तो उन्होंने यह एश्योरेंस दिया कि मैं 48 घंटे के अंदर इस पर कार्यवाही करूंगा और उस पुलिस अधिकारी को सस्पेंड करूंगा और इंक्वायरी बिठाऊंगा। पर महोदया, यह दुर्भाग्य की बात है कि यह घटना 6 तारीख को घटी है और आज 11 तारीख है, अभी तक इस पर कोई ऐक्शन नहीं हुआ है।

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल (उत्तर प्रदेश): अहलुवालिया जी, मैं गारंटी देता हूं कि दिल्ली पुलिस कभी ऐक्शन नहीं लेगी।

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया: महोदया, अगर एक पढ़े-लिखे पत्रकार के साथ यह घटना घट सकती है तो आम जनता का जीवन जो दिल्ली पुलिस के अधिकारियों के हाथ में है, वह किस तरह से असुरक्षित है, यह समझने की बात है। मैं आपके माध्यम से मांग करूंगा कि आप डायरेक्ट करें कि अगर कमिश्नर पुलिस द्वारा इस घटना पर कल सुबह तक सदन बैठने से पहले कार्यवाही नहीं होती है तो हम इस मामले को और जोर से यहां सदन में उठाएंगे और यह बहस का मुद्दा बनेगा। महोदया, इस पर ऐक्शन होना बहुत जरूरी है। जिस तरह ये पुलिस के लोग किसी निर्दोष आदमी को दो-चार घूंसे लगा देते हैं और बेईज्जती करते हैं, उसकी मैं भर्त्सना करता हूं। धन्यवाद।

श्री संघ प्रिय गौतम (उत्तर प्रदेश): केंद्रीय सरकार की भी भर्त्सना करनी चाहिए।

SHRI VITHALBHAI M. PATEL (Gujarat): Madam, the Police Commissioner has announced that he will get a report within 48 hours and take action. He himself has said that it is a serious incident. Now, if he has got the report within 48 hours, he must have taken action against the erring police officers. He must have suspended him. But if he has not taken any action against him, the Home Minister should ask the Police Commissioner what action he has taken and if he has not taken any action, he should order him to take the action immediately. Such things cannot be tolerated nowadays. (*Interruptions*).

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल: महोदया, आपको मैं याद दिलाना चाहता हूं कि अहलुवालिया जी ने जो मसला उठाया है उसका जाती तुजर्बा मुझे दो बार हो चुका है। आपको याद होगा गुजिश्ता साल एक वाक्या हुआ था और पूरे हाउस में प्रिविलेज मोशन के लिए रेजुलूशन पास हुआ था और प्रिविलेज कमेटी को गया जिसमें दिल्ली पुलिस के अफसरों ने मैंबर पार्लियामेंट के साथ, मेरे साथ बदतमीजी की थी। दूसरी बार जनपथ के ऊपर वाक्या हुआ 27 अप्रैल को और तब भी मैंने शिकायत की थी। मुझे बड़ा अफसोस है यह कहते हुए कि मैंने चेयरमैन साहब के जरिए होम मिनिस्टर साहब को आगाह किया और सब बताया लेकिन आज तक कोई ऐक्शन उस पुलिस अफसर के खिलाफ नहीं किया गया है। यहां पर जैकब साहब तशरीफ रखते हैं। कम से कम तीन बार इस तरह के मसले हो चुके हैं, लेकिन आज तक उन पर कोई अमल नहीं हुआ। दिल्ली पुलिस की हौसला अफजाई हमारी होम मिनिस्ट्री कर रही है। दिल्ली पुलिस के अंदर जो वाकये हो रहे हैं, दिल्ली के जर्नलिस्टों के साथ जो ज्यादतियां हो रही हैं, दिल्ली की पुर-अमन जनता के साथ, आम शहरियों के साथ

[श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल]

जो सड़कों पर जुल्म हो रहे हैं उनको मद्देनजर रखते हुए मैं कह सकता हूं कि एक दिन मैं आपको दिखाऊंगा जब इस देश का कोई मिनिस्टर इस पुलिस के हाथों बुरी तरह से जलील होगा, हो सकता है उसकी पिटाई भी हो। उसके बाद शाण्ड होम मिनिस्टर साहब ऐक्शन लेंगे। इसलिए मैं डिमांड करता हूं कि दिल्ली पुलिस की बेरहमी के खिलाफ सख्त ऐक्शन लिया जाए।

†[श्री محمد افضل عرف م· افضل

(उत्तर प्रदेश) .. महोदय - मैं आपके याद दिलाना चाहता हूं कि आहलूवालिया जी ने जो मसला उठाया है, उसका ذاتی تجربہ مجھے دوبار ہو چکا ہے - आपको याद होगा कि گزشتہ سال ایک واقعہ ہوا تھا اور پورے ہاؤس میں پرولیج موشن کیلئے رزولیشن پاس ہوا تھا اور پریویلج کمیٹی को गई जिसमें दिल्ली पुलिस के अफसरों ने मेम्बर पार्लियामेंट के साथ बदतमीजी की थी - दूसरी बार जनवरी के اوپر واقعہ ہوا ۲ اپریل को اور تب بھی میں نے شکایت کی تھی - मुझे बड़ा افسोस है یہ کہتے ہوئے کہ میں نے چیयरमैन साहब के ذریعہ ہوم मिनिस्टर साहब को आगाह किया اور سب بتایا لیکن آجتک کوئی ایکشن اس پولیس افسر کے خلاف نہیں ہوا ہے- یہانپر چیئرمین صاحب تشریف رکھتے ہیں - कम से कम तीन बार इसतरह के मसئلے ہو چکے ہیں لیکن آجتک ان پر کوئی عمل نہیں ہوا - दिल्ली पुलिस की حوصلہ افزائی हमारी होम मिनिस्ट्री कर रही है - दिल्ली पुलिस के अंदर جو واقعات ہو رہے ہیں - दिल्ली के जर्नलिस्टों के साथ जो زیادتیاں ہو رہی ہیں - दिल्ली की پر امن جلتا के ساتھ - عام شہریوں के साथ जो सड़कों पर ظلم ہو رہے ہیں انکو مد نظر رکھتے ہوئے میں کہ سکتا ہوں کہ ایک دن میں آپ کو دکھاؤں گا جب اس देश का कोई मिनिस्टर इस پولیس से ہاتھوں بری طرح سے ذلیل ہوگا - ہو سکتا ہے اسکی پٹائی بھی ہو - اسکے بعد شاید ہوم मिनिस्टर साहब ایکشن لینگے - اسلئے میں قیمانت करता हूं कि दिल्ली पुलिस की زیادتی के خلاف سخت ایکشن لیا जाए -]

श्री राम नरेश यादव (उत्तर प्रदेश) महोदया, अहलूवालिया जी ने जो मामला उठाया है, वह बहुत ही चिन्तनीय और गंभीर है। इसलिए कि दिल्ली देश की राजधानी है। यहां पर ऐसे समय पत्रकारों को गिरफ्तार करना, पिटवाना, पीटना, और उनके विरुद्ध झूठे मुकदमे कायम करना, यह तो बहुत ही शर्मनाक बात है। इससे शर्मनाक बात क्या हो नहीं सकती कि पत्रकार जो हमारे जनतंत्र के चौथे स्तम्भ माने जाते हैं, उन के विरुद्ध इस तरह की उत्पीड़क कार्यवाही हो रही है और माननीय मंत्री और सरकार का ध्यान इस ओर नहीं जा रहा है। इससे घृणित घटना कोई हो नहीं सकती। इसलिए आपके माध्यम से मैं माननीय संसदीय कार्य मंत्री जी, जो गृह राज्य मंत्री

†[] Transliteration in Arabic Script.

हैं, को ध्यान दिलाना चाहता हूं । मंत्री जी जरा ध्यान दीजिए इधर ।

उपसभापति : जैकब साहब आपकी बात सुन रहे हैं ।

श्री राम नरेश यादव : इस तरह के जो गलत काम किए जाते हैं वे कितने निन्दनीय हैं, कितने अशोभनीय हैं, इस बारे में गृह राज्य मंत्री को सदन में वक्तव्य देना चाहिए और आश्वासन देना चाहिए कि इस तरह की अशोभनीय घटनायें पत्रकारिता जगत में नहीं होंगी ।

श्री पर्वतनेनि उपेन्द्र (आन्ध्र प्रदेश): मंत्री जी नहीं सुन रहे हैं . . . (**व्यवधान**)

उपसभापति : मंत्री जी कान में आला लगाये सुन रहे हैं . . .

श्री चतुरानन मिश्र (बिहार) : अगर सुन रहे हैं तो रियेक्ट करने के लिए कहिए । यह तो कहें कि हम पता लगायेंगे . . .

THE DEPUTY CHAIRMAN: He is listening to him.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PARLIAMENTARY AFFAIRS AND THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HOME AFFAIRS (SHRI M. M. JACOB): I am very carefully listening to him. That is why I am not reacting.

श्री चतुरानन मिश्र : उन्होंने क्या कहा ?

उपसभापति : उन्होंने यह कहा कि बहुत ध्यान से गम्भीरता से सुन रहा हूं, इसलिए रियेक्ट नहीं कर रहा हूं, सुन रहा हूं . . .

श्रीमती सत्या बहिन (उत्तर प्रदेश): महोदया, दिल्ली पुलिस के दो रूप हैं . . (**व्यवधान**)

SHRI M. M. JACOB: I will look into it.

उपसभापति : वह जरूर पता लगाकर मालूमात करेंगे और बतायेंगे ताकि इस तरह की कोई घटना आइन्दा न हो ।

श्रीमती सुषमा स्वराज (हरियाणा) : दिल्ली पुलिस वाले अपने आप कितने बहुरूपीय बन जाते हैं मैं बताना चाहती हूं । (**व्यवधान**) पीटने वालों को क्या सजा देनी है यह उनको नहीं पता है . . . (**व्यवधान**)

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया : अभी तक वह डकैत नहीं पकड़ सकें हैं । सरेआम लूटा जा रहा है । शरीफ पत्रकार को मारकर उसको पकड कर पाकिटमार वाली सजा दी जाती हैं । आप समझ रहे हैं कि किस तरह से दिल्ली पुलिस नाकामयाब है । यहां पर ला एंड आर्डर कंट्रोल करने के लिए पत्रकार को घूसे लगाए जा रहे हैं और उसको जेबकतरा कहा जा रहा है । (**व्यवधान**)

श्रीमती सुषमा स्वराज : कोई कानून व्यवस्था नहीं है । (**व्यवधान**)

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ भीम अफजल : पुलिस अफसर को सस्पेंड किया जावेगा क्या यह एश्योरेंस देंगे ? (**व्यवधान**)

उपसभापति : अभी मंत्री जी ने रिएक्ट करके कहा कि मालूमात करेंगे । मुझे यकीन है . . . (**व्यवधान**)

श्री सत्य प्रकाश मालवीय (उत्तर प्रदेश): Madam, it is about four or five days back.

6 दिन हो गए हैं मुश्किल से . . . (**व्यवधान**)

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया : पत्रकार हैं, यूनिवार्ता के सब-एडिटर हैं उनके साथ ऐसी घटना घट सकती है तो साधारण रिक्शा पुल्लर के साथ क्या घटना घट सकती हैं . . . (**व्यवधान**)

श्रीमती सुषमा स्वराज : उसका कसूर क्या है ? (**व्यवधान**)

उपसभापति : आप एक मिनट तशरीफ रखिए । **(व्यवधान)**

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल : आप से दर्खास्त कर रहा हूं और आपको प्रोटेक्शन चाहता हूं । मिनिस्टर साहब ने कहा वह इस मामले को देखेंगे तो मेरा सवाल यह है कि जिस मामले को देखने के लिए उनको पहले कहा जा चुका है जरा उसके बारे में बता दें कि उन्होंने क्या देखा हैं । **(व्यवधान)**

श्रीमती सत्या बहिन : दिल्ली पुलिस के बहुरूपिए को बात बताना चाहती हूं एक तरफ तो पुलिस पत्रकारों को दादागिरी दिखाती हैं और दूसरी तरफ पांच तारीख को मेरे घर पर कुछ गुन्डों ने बिजली काट दी और पथराव किया था तो मेरे बच्चों ने पुलिस स्टेशन टेलीफोन किया तो दो पुलिस वाले आए और गुन्डों से पिट कर चले आए । **(व्यवधान)**

श्री राम नरेश यादव : कैसे लोगों की पुलिस रक्षा कर पायेंगी ? **(व्यवधान)**

उपसभापति : अब बहुत हो गया है आप बैठ जाइये । **(व्यवधान)**

श्रीमती सुषमा स्वराज : इनको ट्रेनिंग के लिए लखनऊ भेजा जाए । **(व्यवधान)** उनका कसूर क्या था आपको मालूम हैं... **(व्यवधान)**

उपसभापति : मैंने सुना लिया उनका क्या कसूर था । **(व्यवधान)**

श्रीमती सुषमा स्वराज : उस पत्रकार को उस पुलिस वाले ने कहा ... **(व्यवधान)**

उपसभापति : अहलुवालिया जी ने बता दिया ।

श्रीमती सुषमा स्वराज : इतना कसूर था कि उस पत्रकार ने कहा कि मुझे अगले बस स्टाप पर उतरना है आप पहले उतर जाइये, मुझे मत उतरने को कहिए, इतने कसूर पर उसको घूसों से और लातों से पीटा गया और फिर पाकिटमार का विशेषण दिया गया **(व्यवधान)**:

उपसभापति : अहलुवालिया जी ने इस पर विस्तार से कहा है । **(व्यवधान)**

SHRI M. M. JACOB: Madam, will look into the matter and..... *(Interruptions)*

श्रीमती सुषमा स्वराज : इससे ज्यादा महत्वपूर्ण मामला यह है .. **(व्यवधान)**

उपसभापति : सीरियस मामला है । पत्रकार है या कोई और साधारण इंसान हैं उसको बगैर किसी वजह के मारना गलत हैं । मंत्री जी ने आश्वासन दिया है कि वह पता लगायेंगे, मालूम करेंगे । अभी से क्या करने वाले हैं, क्या उसको सजा देंगे, मालूमात के पहले कैसे बता दें । **(व्यवधान)**

श्री सत्य प्रकाश मालवीय : 6 दिन हो गए अभी तक तो मालूमात नहीं किया **(व्यवधान)**

उपसभापति : मालवीय जी आप बैठ जाइये । पत्रकारों के प्रोटेक्शन के लिए उन्होंने जिम्मेदारी ली है कि वह जरूर करेंगे । **(व्यवधान)** श्री जार्ज फर्नांडीस ।

श्री सिकन्दर बख्त (मध्य प्रदेश) : आप मुझे इजाजत दें तो एक बात कह दूं । मैं यह कहना चाहता हूं कि पुलिस के संबंध में, एम० पी० ज०, अफसर्स और वीरेन जे० शाह और पत्रकारों के मामलात हमारे सामने आ चुके हैं। मैंने अर्ज किया कि पुलिस के मामलात चुने हुए, लोगों के साथ, अखबार वालों के साथ बाई एंड लाज गलत हैं ।

इसी इंसिडेन्ट की बात नहीं है, आमतौर पर उनका रिलेशनशीप उन

तबको के साथ क्या होना चाहिए इसकी तरफ तवज्जो करना आवश्यक है । खाली एक इंसिडेंट की तहकीकात करके अगर आप वाक्यात को वहीं पर लायेंगे, काफी नहीं है । मिनिस्ट्री को दुरुस्त करने की बात है । वह नहीं हो रहा है ।

[شری سکندر بخت (مدھیہ پردیش) : آپ مجھے اجازت دیں تو میں ایک بات کہہ دوں - میں یہ کہنا چاہتا ہوں کہ پولیس کے سپلیڈ میں - ایم - پیز - افسوس اور ویرین جے- شاہ اور پتروکاروں کے معاملات ہمارے سامنے آ چکے ہیں - میں عرض کیا کہ پولیس کے تعلقات چلے ہوئے لوگوں کے ساتھ - اخبار والوں کے ساتھ باقی ایلیٹ لارجز غلط ہیں -

اس انسیڈینٹ کی بات نہیں ہے - عام طور پر انکا ریلیشن شپ ان طبقوں کے ساتھ کیا ہونا چاہئے- اسکی طرف توجہ کرنا آوشیک ہے - خالی ایک انسیڈینٹ کی تحقیقات کرکے اگر آپ واقعات کو یہاں پر لائیں گے - کافی نہیں - مزاج درست کرنے کی بات ہے - وہ نہیں ہو رہا ہے -]

THE DEPUTY CHAIRMAN: The question is of the attitude. The attitude has to be changed.

REFERENCE TO THE MOVE TO DENATIONALISE BANKS

SHRI JHON F. FERNANDES (Goa): Madam, with regard to the move to denationalise the nationalised banks this statement has created panic in the country. There is no response from the Government. The Government has patently consented. Madam, this statement makes a mockery of the socialist pattern of our country because the very word "socialism" is enshrined in the Preamble of our Constitution. Madam, these banks were nationalised at a great risk by late Mrs. Indira Gandhi who had to fight political and legal battles. I feel these nationalised banks form a living monument to the memory of Mrs. Indira Gandhi. Madam, we can understand the policy if liberalisation of this Government, but it may not be proper for this Government to denationalise these banks. If the Government so desires they can issue new licences to the private banks to come up. I would like to have a statement from the hon. Finance Minister during this Session of the Parliament. Thank you.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Now, it is 1.30 P.M. So we adjourn the House for lunch for one hour and the clarifications on the statement of the Minister will be taken up at 2.30.

The House then adjourned for lunch at thirt-one minutes past one of the clock.

The House reassembled, after lunch, at thirty-three minutes past two of the clock. The Vice-Chairman **Shri Bhaskar Annaji Masodkar** in the Chair.

CLARIFICATION ON STATEMENT BY MINISTER RE REFERENCE TO MAULANA ABUL KALAM ON NATIONAL PARLIAMENTARY QUIZ TELECAST ON THE 1ST SEPTEMBER, 1991—Contd.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI BHASKAR ANNAJI MASODKAR): We have to continue with the clarification on....

†[] Transliteration in Arabic Script.